Paper - III

MT

2017 1100

MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - II - PAPER - III

Time : 3 Hours **Model Answer Paper** **Max. Marks : 80**

विभाग 1 - गद्य

उ.1. (क) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

1) i) **संजाल पूर्ण कीजिए।** **1**

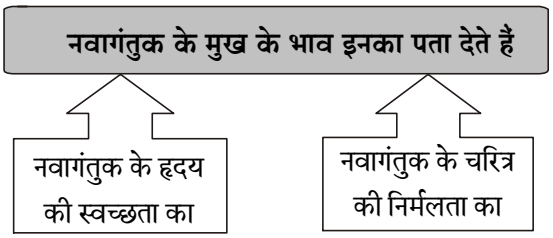

ii) **सही पर्याय चुनकर पूर्ण वाक्य फिर से लिखिए।**

(1) मृग पीछे की ओर मुड़ा क्योंकि **सामने एक नदी का बड़ा ही ऊँचा कगार, दीवार की भाँति खड़ा था ।** ½

(2) सामने कगार देखकर **हिरन का शरीर शिथिल पड़ गया ।** ½

2) i) **सत्य या असत्य पहचानकर लिखिए।**

(1) सत्य ½

(2) असत्य ½

ii) **उत्तर लिखिए।**

(1) नवागंतुक का रूप सुंदर था । ½

(2) उसका शरीर हृष्ट-पुष्ट था । ½

3) i) **निम्नलिखित शब्द मानक वर्तनी के अनुसार लिखिए।**

(1) प्रचण्ड - प्रचंड ½

(2) सुन्दर - सुंदर ½

ii) **निम्नलिखित शब्दों के लिंग परिवर्तन कीजिए।**

(1) राजकुमार - राजकुमारी ½

(2) संन्यासी - संन्यासिनी ½

4) वन्य प्राणी भी धरती माँ की संताने हैं। उन्हें भी जीने का अधिकार है। उनका शिकार करने का अर्थ है - उनसे उनके जीवन का अधिकार छीन लेना । यह सरासर अन्याय है । इनके सुरक्षा के लिए सरकार ने कठोर कानून बनाए है, लेकिन उनका कड़ाई से पालन होना जरूरी है । जंगली जानवरों का शिकार करने वालों को कठोर सजा देनी चाहिए । जिससे जंगली जानवरों की सुरक्षा हो सके । **2**

उ.1. (ख) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **चौखट में सही उत्तर लिखिए।** **1**

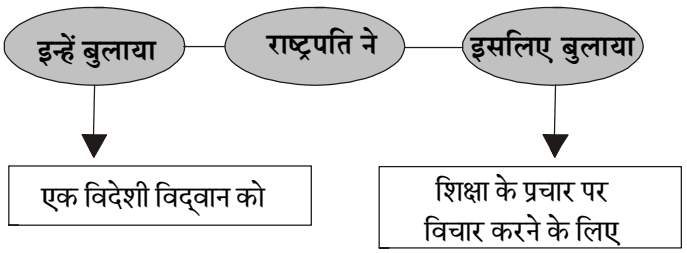

ii) **उत्तर लिखिए।**

(1) अपने मित्र से बात करते समय घड़ी का मुँह दीवार की तरफ कर देना । ½

(2) विदेशी विद्वान को । ½

2) i) **सत्य या असत्य पहचान कर लिखिए।**

(1) असत्य (2) सत्य **1**

ii) **आकृति पूर्ण कीजिए ।** **1**

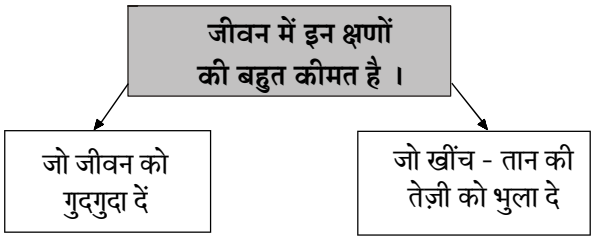

3)	i) **विलोम शब्द लिखिए।** (1) शिक्षा × अशिक्षा (2) विदेशी × स्वदेशी	 ½ ½
	ii) **निम्नलिखित शब्द मानक वर्तनी के अनुसार लिखिए।** (1) खीच तान - खींच-तान (2) मजेदार - मज़ेदार	 ½ ½
4)	हाँ! जीवन में गुदगुदा देने वाले क्षणों की आवश्यकता होती है। जीवन संघर्षभरा होता है। इंसान को कदम - कदम पर ठोकरें खानी पड़ती हैं। ऐसे में यदि कोई हमारे जीवन में आनंद या खुशी के कुछ क्षण दे दे, तो हमारा मन प्रसन्न हो जाता है। इससे हमारा तनाव कम होने में मदद मिलती है। गुदगुदा देने वाले क्षण विनोद के प्रसंगों का निर्माण करते हैं। अत: मानसिक संतुलन बनाए रखने के लिए जीवन में गुदगुदा देने वाले क्षणों की आवश्यकता होती है।	**2**
उ.1.	**(ग) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**	
1)	**कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थान में लिखिए ।**	
	i) जनतंत्र में सबसे अधिक शक्ति **जनता** के हाथ में होती है ।	½
	ii) शासन प्रणाली में **विरोधी** दलों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान होता है ।	½
2)	**निम्नलितित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।**	
	i) जनतंत्र सबसे उत्तम शासन - प्रणाली है, क्योंकि इसमें जनता स्वयं अपने प्रतिनिधि चुनती है ।	½
	ii) जनतंत्र में विरोधी - दल का कार्य शासन दल की मानमानी पर अंकुश लगाना है ।	½
3)	इसमें संदेह नहीं कि जनतंत्र सबसे उत्तम शासन - प्रणाली है । पहली बात है - जनता का शिक्षित और सजग होना । दूसरी बात है - चुनाव में योग्य उम्मीदवारों का खड़ा होना और चुनाव में निष्पक्षता, तीसरी बात है - प्रशासन का भ्रष्टाचार से मुक्त होना । चौथी बात है - सरकार का ईमानदारी से अपने चुनावी वादे पूरे करना । पाँचवी बात है - देश में तीन से अधिक राजनीतिक दल न होना । मेरे विचार से इन पाँच बातों पर खरी उतरने पर जनतंत्र शासन - प्रणाली अवश्य सफल हो सकती है ।	**2**

विभाग 2 - पद्य

उ.2. (च) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **2**

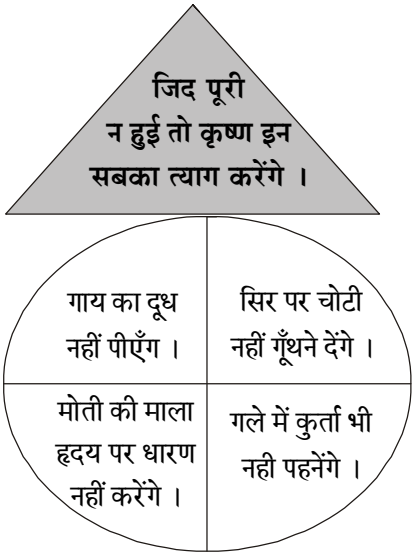

2) i) (1) सिर (2) कंठ **1**

ii) **सही शब्द चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।**

(1) बालक कृष्ण माँ यशोदा से **चंद** का खिलौना माँगता है । **½**

(2) कृष्ण **नंदबाबा** का बेटा कहलाएँगे । **½**

3) i) **वैसे - कान** - कान भरना **1**

सिर - सिर खाना

ii) **वैसे - न कहैहौं** - नहीं कहलाऊँगा **1**

न ऐहौं - नहीं आऊँगा

4) कृष्ण चंद्रमा को पाने का हठ करते हुए माता यशोदा से कहते हैं, मैं तो सिर्फ चाँद रूपी खिलौना ही लूँगा। अगर तुमने यह खिलौना लाकर मुझे नहीं दिया तो धौरी गाय का दूध नहीं पीऊँगा। अपने बालों की चोटी भी तुमसे नहीं बँधवाऊँगा। इस पद में कृष्ण की बाललीला का सुंदर वर्णन किया गया है। **2**

उ.2. (छ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **2**

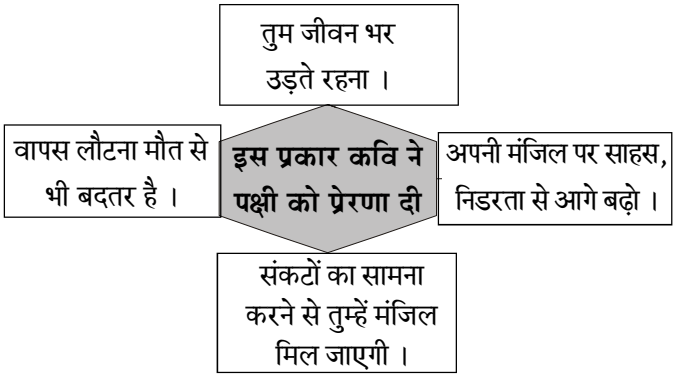

2) i) **समझकर लिखिए।**

(1) आशावाद (2) साहस **1**

ii) **कृति पूर्ण कीजिए ।** **1**

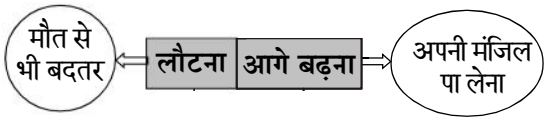

3) i) (1) मौत से भी बदतर होना **½**

(2) मनुष्य **½**

ii) **विलोम शब्द लिखिए।**

(1) जीवन × मृत्यु (2) पीछे × आगे **1**

4) कवि खग के माध्यम से मानव को सदैव चलते रहने की प्रेरणा दे रहे हैं। कवि पक्षी से निर्भीकता, साहस, हिम्मत के साथ जीवन भर उड़ने को कह रहे हैं। कवि पक्षी से कह रहे हैं कि तू अगर उड़ते-उड़ते अपना रास्ता भूल जाए या तेरे कमज़ोर पंखों की गति कम हो जाए, तब भी तू थककर, डरकर पीछे वापस मत लौटना। तुम आत्मनिर्भर होकर उड़ते रहो। तुम्हारा लौटना मौत से भी बदतर होगा, अत: अपनी मंजिल पर साहस के साथ आगे बढ़ते रहो। **2**

विभाग 3 - पूरक पठन

उ.3. परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

1) i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

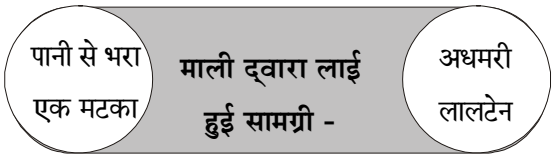

ii) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

2) विदाई समारोह स्कूली बच्चों के लिए एक खुशी की दावत होती है। प्रेम व अपनत्व की भावना विदाई समारोह से उभरकर सामने आती है। जिस स्कूल में बचपन के दिन बीत गए, उस स्कूल से दसवीं के बाद कॉलेज जाते समय प्रत्येक छात्र का मन व्यथा से भर आता है। सभी एक-दूसरे को भावभीनी विदाई देते हैं। सभी छात्र एक-दूसरे के गले लगकर अपनत्व की भावना को प्रकट करते हैं। सभी छात्र अपने अध्यापकों के प्रति कृतज्ञता का भाव व्यक्त करते हैं। उन्हें पुष्प-गुच्छ देकर उनके प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करते हैं। **2**

विभाग 4 - व्याकरण

उ.4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

1) i) **निम्नलिखित शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** **½**
महादेवी के संस्मरण लोकप्रिय हैं ।

ii) **अधोरेखांकित शब्द का भेद पहचानिए ।** **½**
कौन - प्रश्नवाचक सर्वनाम

2) i) **निम्नलिखित वाक्य शुद्ध करके लिखिए ।** **1**
मंगली के छह साल की बेटी ने उससे साहब के बारे में पूछा ।

3) i) **सहायक क्रिया का वाक्य में प्रयोग कीजिए।** **½**
उसने अपने बच्चों को रोता पाया ।

	ii) **सहायक क्रिया छाँटकर लिखिए ।** पड़ा - (पड़ना) सहायक क्रिया	½
4)	**प्रेरणार्थक क्रिया के रूप लिखिए ।** **मूल क्रिया** — **प्रथम प्रेरणार्थक** — **द्‌वितीय प्रेरणार्थक** करना — कराना — करवाना	**1**
5)	i) **अव्यय का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** नाहक - लोगों ने ड्राइवर को <u>नाहक</u> मारा ।	**1**
	ii) **अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए ।** अब - क्रियाविशेषण अव्यय **अथवा** की ओर - संबंधसूचक अव्यय	**1**
6)	**कालपरिवर्तन कीजिए ।** इतने लोगों ने छत पाई हैं । लड़का मोटर साइकिल खड़ी कर रहा था ।	**2**
7)	i) **मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए ।** कानों में गूँजना - सुनाई देना । **वाक्य** : खेल के मैदान का शोर हमारे **<u>कानों में गूँज रहा था</u>** ।	**1**
	ii) **अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए ।** नौकरी पाते ही विवेक <u>फूला न समाया ।</u>	**1**
	विभाग 5 - रचना	
उ.5. 1)	**सूचना : आवश्यकतानुसार परिच्छेद में लेखन अपेक्षित है :** **निम्नलिखित में से किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए ।** महेश शर्मा गांधी नगर, अमरावती - 355421 दिनांक - 5 मार्च, 2017	**5**

सेवा में,
श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी जी,
महानगर पालिका,
अमरावती - 355421

विषय : **अशुद्ध जल की आपूर्ति के संबंध में शिकायत पत्र ।**

माननीय महोदय,

मैं आपके शहर का एक निवासी हूँ । इस पत्र के द्वारा मैं आपका ध्यान शहर में हो रहे अशुद्ध जल की आपूर्ति की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ । बड़े दुख के साथ आपको सूचित करना पड़ रहा है कि पिछले कई दिनों से शहर में अशुद्ध जल की आपूर्ति की जा रही है । अशुद्ध जल पीने से सारा शहर महामारी की चपेट में आ गया है । लोग डायरिया जैसी भयंकर बीमारी के शिकार हो रहे हैं । लगता है जल में विषाणु फैल गए हैं । महानगर पालिका के अधिकारी अब तक अनजान बने हुए हैं और नगर निवासी परेशान हैं । शुद्ध जल की आपूर्ति के बिना बीमारीपर नियंत्रण पाना असंभव है । यदि समय रहते ध्यान न दिया गया तो स्थिति और भी बिगड़ सकती है ।

अत: आपसे प्रार्थना है कि जनहित को ध्यान में रखते हुए तत्काल उचित कार्यवाही करने की कृपा करें ।

कष्ट के लिए क्षमा पार्थी हूँ ।

धन्यवाद!

भवदीय
महेश शर्मा

टिकट

सेवा में,
श्रीमान स्वास्थ्य अधिकारी जी,
महानगर पालिका,
अमरावती - 355421

प्रेषक,
महेश शर्मा,
गांधी नगर,
अमरावती - 355421

अथवा

सागर शर्मा,
105/ जवाहर चौक,
मुंबई।
दिनांक - 5 मार्च, 2017

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य जी,
जवाहर विद्यालय, गोरेगाँव,
मुंबई।

विषय : लिपिक पद के लिए प्रार्थनापत्र।

माननीय महोदय,

मैंने नवभारत टाइम्स में कल पढ़ा कि आपके विद्यालय में लिपिक की जरूरत है। उक्त पद के लिए मैं आवेदन पत्र भेज रहा हूँ।

मेरे संबंध में जानकारी इस तरह है :-

एस.एस.सी. परीक्षा – मार्च, 2011 (प्रथम श्रेणी)

एच.एस.सी. परीक्षा – मार्च, 2013 (प्रथम श्रेणी)

संगणक का अनुभव – तीन वर्ष

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यदि मुझे अवसर मिला तो अपने आपको एक अच्छा और जिम्मेदार लिपिक साबित करने का प्रयास करूँगा।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धन्यवाद!

भवदीय,
सागर शर्मा।

संलग्न प्रमाणित प्रतिलिपियाँ :

1) एस.एस.सी. प्रमाण पत्र के साथ अंकतालिका।
2) एच.एस.सी. प्रमाण पत्र के साथ अंकतालिका।
3) संगणक संबंधी अनुभव प्रमाण पत्र।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य जी,
जवाहर विद्यालय, गोरेगाँव,
मुंबई।

प्रेषक,
सागर शर्मा,
105/ जवाहर चौक,
मुंबई।

2) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में कहानी लिखकर शीर्षक दीजिए । 5

'सच्ची सहायता'

एक समय की बात है । दोपहर का समय था । अदालत में भोजन का अवकाश हो चुका था । सारे वकील विश्राम कक्ष में बैठ कर बातें कर रहे थे । उसी समय एक मासूम बालक भीख माँगता हुआ विश्राम कक्ष के पास आ पहुँचा ।

एक वकील ने उस बच्चे को भीख माँगते हुए देखा तो अपने पास बुला लिया । उसने बच्चे से भीख माँगने का कारण पूछा तो बच्चे ने बताया कि उसकी माँ बीमार है, जिसके इलाज के लिए वह भीख माँग रहा है ।

सभी वकीलों ने मिलकर उस बच्चे को समझाया कि भीख माँगना बुरा काम हैं । तुम कुछ परिश्रम करो

	और उसकी सच्ची सहायता करते हुए उसे बुट - पॉलिश का सामान खरीद कर दिया । अब वह अदालत के गेट पर बैठ कर बुट - पॉलिश करने लगा और मेहनत का पैसा कमाने लगा । **सीख** : इस कहानी से यह सीख मिलती है कि हमें किसी की मदद भिक्षा देकर नहीं बल्कि ऐसी सहायता देकर करनी चाहिए जिससे वह खुद कमा कर खा सके और उसे किसी के आगे हाथ न फैलाना पड़े ।	
3)	**निम्नलिखित गद्यखंड को ध्यानपूर्वक पढ़कर पाँच ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए, जिनके उत्तर एक वाक्य में हो ।** (1) संसार में कौन - सी तीन बातें बड़ी महत्तवपूर्ण हैं ? (2) किस ज्ञान को प्राप्त कर तुम संसार के किसी भी कोने में जाओगे तो अपना निर्वाह कर सकोगे ? (3) अक्षर ज्ञान किसलिए होता है ? (4) हमें क्या याद रखना है ? (5) अमीरी और गरीबी की तुलना में कौन अधिक सुखद है ?	**5**
उ.6.	**प्रसंग लेखन : (लगभग 60 से 80 शब्दों में)** मैं ग्रीष्मावकाश में गाँव गया था। नब्बे वर्ष के रामू काका को आम का पौधा लगाते देख मैं स्तब्ध रह गया । मन में सोचा कि इन्हें तो इस पेड़ के आम खाने के लिए नहीं मिलेंगे । फिर भी वे पौधा लगा रहे हैं । मैंने जिज्ञासावश उन्हें इस बारे में पूछा तो उन्होंने कहा, तो क्या हुआ बेटा ? भले ही इस पेड़ के फल खाने के लिए मैं जीवित नहीं रहूँगा । तुम तो जीवित रह सकते हो और फिर तुम्हारी आने वाली पीढ़ी इसके फल जरूर खाएगी । इसी से मुझे संतुष्टि मिलेगी । उनके इस कथन को सुनकर मैंने कहा, काका जी, आजकल तो भलाई का जमाना नहीं रहा । लोगों को अपने बारे में सोचने के लिए वक्त नहीं है लेकिन आप जैसे कई लोग आज भी दूसरों के बारे में सोच रहे हैं और मानवता के कार्य में अपना योगदान दे रहे हैं । हाँ बेटा, मानवता से बढ़कर कोई भी कार्य नहीं होता । तुम भी इस कार्य को अपनाकर अपने आप को धन्य कर पाओगे । काका जी के इस कार्य से मुझे सिर्फ प्रेरणा ही नहीं बल्कि मेरे अंदर एक ऐसे अद्भुत आत्मविश्वास का संचार हुआ, जिसका वर्णन कर पाना मेरे लिए एक कठिन कार्य होगा ।	**5**
2)	**स्वमत : (लगभग 60 से 80 शब्दों में)** कानून की नजर में लड़का-लड़की एक समान होते हैं । हमें उनमें भेद नहीं करना चाहिए । विज्ञान और तकनीकी के इस युग में हमने इतनी प्रगति कर ली है, फिर भी हम लिंग भेद जैसी कुभावनाओं, कुरीतियों के शिकार हो रहे हैं । आज भी चोरी चुपके लिंग का परीक्षण हो रहा है और कई माता-पिता लड़के की चाहत में अपनी लड़कियों को इस दुनिया में आने से पहले ही कोख में मार डालते हैं । कई डॉक्टर भी अधिक पैसों के लालच में इस प्रकार का घिनौना कार्य करने के लिए तैयार हो जाते हैं। यह अनैतिक, असामाजिक कार्य है, लड़की देवी का रूप होती है । वह 'कल्पना' होती है । वह 'लता-आशा' होती है । वह 'किरण' बनकर 'स्वराज' की भाँति संसद में आम जनता के हित के लिए आक्रामक भी हो जाती है । अत: लड़की की रक्षा करना, उसकी हिफाजत करना हम सभी का कर्तव्य है । हम सबको मानवता के इस कार्य में सम्मिलित होना चाहिए और 'बेटी बचाओ आंदोलन' को प्राथमिकता देनी चाहिए ।	**5**

3) किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :- (लगभग 80 से 100 शब्दों में) **5**

1)

पानी की समस्या और उपास

कवि रहीम की यह उक्ति 'बिन पानी सब सून' अक्षरश: सत्य है । बिना पानी के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती । जहाँ पानी है, वहीं जीवन है। पृथ्वी ही ऐसा अभी तक का ज्ञात ग्रह है, जहाँ पानी है और समुचित मात्रा में है । पृथ्वी का करीब तीन-चौथाई भाग पानी से घिरा हुआ है । अन्य ग्रहों जैसे - शनि, बृहस्पति, मंगल या फिर चंद्रमा पर जीवन के कोई लक्षण नहीं क्योंकि वहाँ पानी नहीं है । विडंबना यह है कि भारत जो पवित्र नदियों की भूमि कहलाता है, उसी देश को पानी की विकट समस्या से जूझना पड़ रहा है । हमारे देश में हजारों गाँव ऐसे हैं, जहाँ पीने तक का पानी दूर-दूर से लाकर काम चलाते हैं । गर्मियों में तो और भी बदतर हालत हो जाती है । सरकारी आँकड़ों में तो 90 प्रतिशत जनसंख्या को पानी उपलब्ध है लेकिन सर्वेक्षण करने पर पाया गया है कि केवल 30 प्रतिशत जनसंख्या ही इसका लाभ उठा पाती है । इसके अलावा जहाँ कहीं सरलता से पानी उपलब्ध है भी तो वह प्रदूषित होता है ।

सवाल यह उठता है कि आखिर इतनी विपुल जल-राशि के होते हुए भी हमारे सामने पानी की इतनी गहरी समस्या क्यों उठी है ? इस समस्या का सबसे बड़ा कारण है - दिन दूनी रात चौगुनी की रफ्तार से बढ़ती जनसंख्या। उसकी भौतिक आवश्यकताओं और भोगवादी प्रवृत्ति ने ही इस समस्या को जन्म दिया है । औद्योगीकरण ने पानी का जबरदस्त दोहन तो किया ही है, उसे प्रदूषित करने में भी सबसे आगे रहा है। कल, कारखानों का गंदा पानी नदियों में बहाए जाने की मूर्खता का ही दंड है, जो आज मनुष्य शुद्ध पानी की बूँद-बूँद को तरस रहा है । फसल की ज्यादा पैदावार के लिए कृत्रिम खादों का बढ़ता प्रयोग तथा कीटकनाशक दवाएँ जमीन को खराब तो कर ही रही हैं, जमीन के अंदर के पानी को भी वे विषाक्त बना रही हैं । मनुष्य ने पेड़ों पर कुल्हाड़ी चलाते समय यह नहीं सोचा कि वह अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है । पेड़ बारिश के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करते हैं । बारिश के पानी तथा भूमि-क्षरण (soil erosion) को अपनी जड़ों के द्वारा बहने से रोकते हैं । पेड़ों को काटने की मूर्खता का ही परिणाम है कि कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ की विभीषिका का रौद्र रूप दिखाई पड़ता है ।

इस समस्या से निपटने के लिए सबसे पहले जरूरी यह है कि वर्षा के जल को हम व्यर्थ न जाने दें । उसे संचित करने की दिशा में जरूरी कदम बढ़ाएँ । तालाब, कुएँ आदि का ज्यादा से ज्यादा निर्माण हो । वृक्षारोपण व्यापक पैमाने पर हो । हर बिल्डिंग की छतों से बारिश का पानी सीधे जमीन के अंदर जाए । उसके लिए भी योजना बनाकर क्रियान्वित किया जाए। जमीन के अंदर पानी ज्यादा से ज्यादा जाएगा तो पानी का स्तर बढ़ेगा और नलकूपों द्वारा पानी की माँग को पूरा किया जा सकेगा । वाटर हार्वेस्टिंग का प्राचीन और नया दोनों रूप पानी के संचयन के लिए फायदेमंद है । नदियों का पानी स्वच्छ बना रहे, इसके लिए कल, कारखानों के पानी के निकासी का अलग प्रबंध किया जाना चाहिए । ये कार्य व्यक्तिगत, सामाजिक तथा राष्ट्रीय सभी रूपों में व्यापक पैमाने पर हो, तभी सफल हो सकेगा । प्रकृति ने हमें जो जीवन का आधार दिया है, उसका कृतज्ञ होते हुए उसका संरक्षण करें तथा प्रदूषित होने से बचाएँ, इसी में हमारी भलाई है ।

अगर हम अब भी इस दिशा में जागरूक नहीं हुए तो आनेवाली स्थिति कितनी विकट हो सकती है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है । जल ही जीवन है ।

2) **पर्यावरण व विकास** **5**

'पर्यावरण' शब्द 'परि' तथा 'आवरण' दो शब्दों से मिलकर बना है । इसका अर्थ है – चारों ओर का वातावरण, जिनसे पृथ्वी ढकी और सुरक्षित है । इसमें जल, मिट्टी, वायु, गैस, पेड़-पौधे और वनस्पतियाँ आदि सभी शामिल हैं । ये सब मिलकर एक संतुलित वातावरण तैयार करते हैं, जिन पर समस्त प्राणियों का अस्तित्व निर्भर होता है । जब - जब किसी भी कारणवश इनके साथ छेड़खानी की गई, इनके नियमों का उल्लघंन किया गया; तब - तब मनुष्य प्राकृतिक विपदाओं का शिकार हुआ है । चाहे वह बाढ़ की विभीषिका हो या अकाल की चपेट ।

प्रकृति ने हमारे लिए एक माँ की तरह सुखद, सुरक्षित एवं स्वस्थ वातावरण का निर्माण किया है । हमें उसकी रक्षा करते हुए उसका उपभोग करना चाहिए । कहा गया है - रक्षये प्रकृति पांतुलिका । अर्थात प्रकृति प्राणियों की रक्षा करती है । लेकिन हम मनुष्य अपने स्वार्थ और भौतिक सुखों की होड़ में प्रकृति माँ के इस वरदान की उपेक्षा कर उसे दूषित करने में लग गए । जैसे-जैसे मनुष्य विकास की तरफ बढ़ता गया, वैज्ञानिक आविष्कार होते गए, वैसे-वैसे पर्यावरण-प्रदूषण का खतरा भी बढ़ता गया ।

पर्यावरण-प्रदूषण की समस्या आधुनिक युग की देन है । वैज्ञानिक उन्नति के साथ उद्योग धंधों का विकास हुआ । अनेक कल-कारखाने स्थापित हुए । अनेक घातक अस्त्र-शस्त्र बनने लगे । इन सबसे उत्पन्न जहरीले पदार्थ वायु, जल में मिलकर उसकी प्राकृतिक रचना को असंतुलित करने लगे । तब जीवन रक्षक यही पर्यावरण हमारे लिए घातक बनना शुरू हो गया ।

विकास की इस अंधी दौड़ ने हमारी नदियों के शुद्ध जल को भी प्रदूषित कर दिया है । कल-कारखानों का गंदा पानी सीधे नदियों में बहा दिया जाता है । इसी दूषित जल को पीने के लिए मनुष्य बाध्य है और अनेक रोगों का शिकार हो जाता है ।

वाहनों के नित नए विकास और उनकी बढ़ती तादाद ने हमारे प्राणवायु को भी जहरीला बना दिया है । वाहनों से निकले गैस, धुआँ मनुष्य के जीवन में जहर घोल रहे हैं ।

वैज्ञानिक उन्नति ने मनुष्य को जहाँ विकास के अवसर सुलभ कराए, वहीं वह हमारी त्रासदी का कारण भी बना । भोपाल गैस की दुर्घटना इसका ज्वलंत उदाहरण है । इसमें हजारों लोग मौत की नींद सो गए और जो बच गए वह विकलांग होकर मजबूर हो गए । विकास के इस अभिशप्त जीवन को भोगने के लिए ।

प्रत्येक विकासशील देश स्वयं को सामरिक दृष्टि से संपन्न बनाने के लिए हथियारों की होड़ कर रहा है । परमाणु-परीक्षण से जो रेडियोधर्मी तरंगे बनती हैं , वह वर्षों तक नष्ट नहीं होतीं और वायुमंडल में मिलकर पीढ़ी दर पीढ़ी के लिए अभिशाप बनकर उपस्थित हो जाती हैं ।

पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाला सबसे बड़ा कारण है - जनसंख्या की वृद्धि । बढ़ती माँगों को पूरा करने के लिए कृत्रिम खादों का बढ़ता प्रयोग, कीटनाशक दवाओं के लगातर छिड़काव ने भूमि और उसके भीतरी जल तथा वायु सबको प्रदूषित किया है । आवास की समस्या हल करने के लिए वनों की अंधाधुंध कटाई ने पर्यावरण को सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचाया है । समय-समय पर आने वाली प्राकृतिक विपदाएँ इसका प्रमाण हैं । प्राचीनकाल में इन्हीं विपदाओं से बचे रहने के लिए पेड़-पौधों, वनों को देवी-देवता समझकर उन्हें पूजा जाता था । मनुस्मृति में तो पेड़ काटनेवालों को दूसरे नरक का भागी बताया गया है -

''छेदनं वृक्ष जातीनां द्वितीय नरकं स्मृतम् ।''

पर्यावरण को बचाने के लिए जागरूकता फैल तो रही है, पर जब तक प्रत्येक नागरिक इसके लिए

अपना योगदान नहीं देता, तब तक यह सफल नहीं हो सकता । पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए निम्नलिखित कार्य किए जाने चाहिए - अधिकाधिक मात्रा में वृक्ष लगाए जाएँ और उनका संरक्षण किया जाए । नदियों के जल को प्रदूषित करने वालों को कड़ा दंड दिया जाए । तेज ध्वनि के उपकरणों, वाहनों पर ध्वनिनियंत्रण लागू किया जाए । इनका उल्लंघन करने वालों को कड़ी से कड़ी सजा देने पर ही ये फलीभूत हो सकता है ।

अभी भी वक्त है । यदि समय रहते मनुष्य सचेत न हुआ तो मानवजीवन का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा । अत: यह शस्य-श्यामला वसुंधरा, जो एक माँ की तरह हमारी रक्षा करती है, हमारा पोषण करती है, उसके प्रति हमारा कर्तव्य है कि उसे सुरक्षित रखने में पूरा योगदान करें । वरना वह दिन दूर नहीं जब अपनी जीवन-डोर हम खुद अपने हाथों से काट बैठेंगे ।

❖❖❖❖